सहजयोग आज का महायोग

आध्यात्म को समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है

सहजयोग संस्थापिका परम पूज्य श्री माताजी ने सहजयोग के संबंध में अपनी पुस्तक 'सहजयोग' में वर्णित किया है कि, 'सर्वप्रथम जिज्ञासु होकर, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति को इस विषय तक पहुंचना चाहिए। परिकल्पना के समान, सम्मान पूर्वक इस विषय का विवेचन होना चाहिए और परीक्षण करने पर यदि सत्य पाया जाये तो निष्कपटता पूर्वक सचरित्र लोगों द्वारा यह स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि यह विषय व्यक्ति के पूर्ण हित के लिए तथा पूरे विश्व के हित लिए है। 'सहजयोग ध्यान धारणा द्वारा जब हम आत्मा 'से एकाकार हो जाते हैं तो हमारे क्रिया कलापों को, विचारों को बुद्धि का नहीं वरन् आत्मा का मार्ग दर्शन प्राप्त होता है। हमारी आदतें विचार, उद्देश्य, आवश्यकताएँ परिवर्तित होने लगती है और हम प्रत्येक कार्य में आनन्द का अनुभव करने लगते हैं। सहजयोगी आनंद, प्रेम, करुणा, संगीत, नृत्य व हास्य से भरा हुआ होता है। अतः सहजयोग सामूहिकता द्वारा विकीर्णित चैतन्य लहरियां अविश्वसनीय होती हैं जिन्हें अनेकों बार श्री माताजी के कार्यक्रम में कैमरे ने कैद किया है। जब हम आत्मा के सत्य को समझ लेते हैं तो अनेक प्रकार के डर व भय समाप्त हो जाते हैं।भगवान श्री कृष्ण ने भी आत्मा के सत्य के विषय में कहा है - 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः (इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकती 7 (भगवद्गीता, अध्याय 2 श्लोक 231) कुण्डलिनी शक्ति जब सहस्त्रार की ओर बढ़ती है तो हमारे भीतर अन्तर्शुद्धि की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है हमारे चक्रों नाड़ियों में जो भी दोष होते हैं उनका निवारण प्रारम्भ हो जाता है जिससे अनेक बीमारियाँ स्वतः ही ठीक होने लगती है। परंतु सहजयोग केवल समस्याओं के समाधान का विकल्प नहीं बल्कि सत्य की खोज का मार्ग है। सहजयोग आत्मज्ञान को प्राप्त कर आत्मनिरीक्षण द्वारा मनुष्यत्व से देवत्व की ओर उत्थान का योग है

ब्लैक स्वान : अनिश्चितता के युग में असंभव का सत्य,

दुनिया अक्सर उन घटनाओं से हिल जाती है जिनकी कल्पना किसी ने नहीं की होती। सब कुछ सामान्य लगता है, और तभी एक अज्ञात विस्फोट, न किसी गणित में, न किसी योजना में दर्ज, सब बदल देता है। यही है 'ब्लैक स्वान ', नसीम निकोलस तालेब की उस गूढ़ अवधारणा का नाम, जिसने मानव सभ्यता के आत्मविश्वास पर सबसे गहरा प्रश्नचिह्न लगाया।

तालेब के अनुसार, 'ब्लैक स्वान' ऐसी घटना है जो तीन गुणों से पहचानी जाती है, वह अत्यंत दुर्लभ होती है, घटने पर उसका प्रभाव विनाशकारी या निर्णायक होता है, और घटने के बाद लोग उसे 'तर्कसंगत' ठहराने की कोशिश करते हैं। मनुष्य की यही आदत, असंभव को घट जाने के बाद उसे कहानी में बदल देने की, इतिहास की सबसे बड़ी बौद्धिक विडंबना है।

मानव सभ्यता का हर मोड़ किसी न किसी ब्लैक स्वान से जुड़ा है। 1914 में एक ऑस्ट्रियाई राजकुमार की हत्या ने दो विश्वयुद्धों की भूमिका रच दी। 1945 में हिरोशिमा पर गिरा बम विज्ञान की शक्ति को भय में बदल गया। 1989 में बर्लिन की दीवार गिरी तो किसी ने नहीं सोचा था कि शीत युद्ध एक रात में खत्म हो जाएगा। और फिर 2008 आया, जब विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था कुछ महीनों में घुटनों पर थी। इन सभी घटनाओं का साझा सूत्र यही था, इन्हें किसी ने आते नहीं देखा।

मनुष्य भविष्य का गणित गढ़ने में इतना मग्न है कि वह 'अज्ञात की सच्चाई' भूल चुका है। अर्थशास्त्रियों ने बाजार के संतुलन के सिद्धांत बनाए, राजनेताओं ने स्थिरता की नीतियाँ बनाईं, वैज्ञानिकों ने 'सटीक भविष्यवाणी' का दावा किया, पर इतिहास बार-बार साबित करता रहा कि सबसे बड़ी घटनाएँ सांख्यिकीय रूप से असंभव थीं। कोविड-19 इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है, एक वायरस ने दुनिया की अर्थव्यवस्था, राजनीति, जीवन और मृत्यु के अर्थ को ही पुनर्लेखित कर दिया।

ब्लैक स्वान का दर्शन केवल आपदाओं की कथा नहीं है, यह उस 'मानवीय अंधेपन' का भी विश्लेषण है जिसमें हम जी रहे हैं। हम वही देखते हैं जो हमारे विचारों से मेल खाता है, इसे तालेब 'कन्फर्मेशन बायस' कहते हैं। हम हर असफलता को किसी ज्ञात कारण से जोड़ने की कोशिश करते हैं ताकि यह भ्रम बना रहे कि हम नियंत्रण में हैं। पर सच यह है कि जीवन का सबसे बड़ा हिस्सा हमारे नियंत्रण में कभी था ही नहीं।

ब्लैक स्वान केवल राजनीति, अर्थशास्त्र या विज्ञान की घटना नहीं, यह अस्तित्व का रूपक है। एक व्यक्ति का जीवन भी ऐसे ही अनिश्चितताओं का जाल है। किसी दुर्घटना, किसी अवसर या किसी आकस्मिक मिलन से जीवन की दिशा पलट जाती है। हर व्यक्ति के जीवन में कहीं न कहीं एक ब्लैक स्वान घटता है, और फिर वह अपने अतीत को इस तरह पुनर्गठित करता है मानो सब कुछ पूर्वनियोजित था। यही आत्मवंचना का आरंभ है।

तालेब ने अपनी किताब में यह भी बताया कि हमें ब्लैक स्वान से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसके लिए तैयार रहना चाहिए। जो व्यक्ति या समाज अनिश्चितता को स्वीकार करता है, वही वास्तव में टिकता है। यूनानी दार्शनिक हेराक्लिटस ने कहा था, 'जीवन में परिवर्तन ही एकमात्र स्थायित्व है।' तालेब इसी विचार को आधुनिक रूप में सामने लाते हैं, वे कहते हैं कि हमें 'fragile' नहीं, बल्कि Öantifragile' बनना चाहिए, यानी संकट से टूटना नहीं, बल्कि हर झटके से और मजबूत होना।

आज की डिजिटल सभ्यता के अत्यंत 'E&tremistan' की अवस्था में जी रही है, एक ट्वीट अरबों डॉलर कंपनियों का मूल्य गिरा सकता है, एक ऐप पूरी उद्योग-व्यवस्था को नष्ट या पुनर्जन्म दे सकता है, एक वैज्ञानिक खोज मानवीय चेतना की परिभाषा बदल सकती है। यह दुनिया औसत के नियमों पर नहीं, बल्कि चरम घटनाओं पर चल रही है। और जो इस चरमता को समझता है, वही भविष्य का वास्तुकार बनता है।

हमारे समाज में अक्सर कहा जाता है कि 'योजना बनाओ, लक्ष्य तय करो, और नियंत्रित रहो।' पर ब्लैक स्वान कहता है, 'असंभव को भी जगह दो।' अपने जीवन, अपने कार्य और अपने विचारों में कुछ ऐसा अवकाश रखो जहाँ अज्ञात प्रवेश कर सके। नवाचार, कला, प्रेम, खोज, ये सब ब्लैक स्वान की संतानें हैं। इन्हें कभी पूर्वनिर्धारित नहीं किया जा सकता।

शायद इसलिए दुनिया के सबसे बड़े बदलाव हमेशा अप्रत्याशित रहे हैं। बौद्ध ने सिंहासन छोड़ा, न्यूटन पर सेब गिरा, गांधी दक्षिण अफ्रीका की किसी रेलगाड़ी में अपमानित हुए, इंटरनेट का बीज सैन्य प्रयोगशाला में पड़ा, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज हमारी चेतना का प्रतिबिंब बन रही है। यह सब योजनाओं के परिणाम नहीं, आकस्मिकताओं के चमत्कार हैं।

ब्लैक स्वान हमें यह सिखाता है कि अराजकता में ही नया क्रम जन्म लेता है। जब हम अनिश्चितता को शत्रु नहीं, बल्कि शिक्षक की तरह देखने लगते हैं, तभी विकास संभव होता है। दुनिया का हर सृजन, हर खोज, हर प्रेम और हर क्रांति इसी अज्ञात की कोख से निकली है।

नसीम तालेब की पुस्तक कोई वित्तीय विश्लेषण नहीं, बल्कि एक दार्शनिक चेतावनी है, कि मनुष्य को चाहे जितनी भी तकनीक, डेटा और भविष्यवाणी का गर्व कर ले, वह कभी भी 'पूरा ज्ञात' नहीं बन सकता। ज्ञान की विनम्रता ही जीवित रहने की एकमात्र शर्त है।

जीवन के समंदर में ब्लैक स्वान वह लहर है जो हमें याद दिलाती है, दिशा जितनी भी तय हो, भाग्य के करीने हमेशा अधूरे रहते हैं। हमें सिर्फ इतना करना है कि नाव मजबूत रखी जाए, पतवार हाथ में रहे, और हृदय में यह साहस कि जब अगला तूफ़ान आए, तो हम उसे डर की नहीं, खोज की दृष्टि से देखें।

रविकान्त राऊत
जबलपुर (म. प्र.)

प्रथम अध्याय : प्रेरणा का अक्षय स्रोत और वैचारिक आधार

न्याय, समानता और संवैधानिक पुनर्जागरण का संकल्प

जब विचार संकल्प का रूप ले लेते हैं, तो वे युग का निर्माण करते हैं। मेरा संपूर्ण जीवन और अस्तित्व उस महामानव के संघर्षों की प्रतिध्वनि है, जिन्होंने वैश्विक पटल पर मानवाधिकारों की नई परिभाषा लिखी। बोधिसत्व डॉ. बी.आर. अंबेडकर मेरे लिए केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि एक जीवंत चेतना हैं। जब मैं अपने नाम के साथ 'अंबेडकर' जोड़ता हूँ, तो यह केवल एक सरनेम नहीं, बल्कि एक अत्यंत भारी उत्तरदायित्व है।

मेरी विचारधारा का मूल मंत्र है: 'मानवता ही सर्वोच्च धर्म है।' बाबा साहेब ने सिखाया कि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक उसके मूल में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र न हो। मेरा अटूट विश्वास है कि समाज में व्याप्त हर बुराई का समाधान केवल और केवल बुद्ध के 'धम्म' और बाबा साहेब के 'संविधान' में निहित है। मेरी प्रेरणा भी अंबेडकर हैं और मेरी आईडियोलॉजी भी अंबेडकरवाद है।

द्वितीय अध्याय: इंदौर की माटी और विरासत का गौरव

मेरा सौभाग्य है कि मेरा जन्म और कर्म उसी पावन धरा पर हो रहा है, जहाँ के महू (डॉ. अंबेडकर नगर) में बाबा साहेब का जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ था। इंदौर की यह माटी मेरे लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है। महू की वह सैन्य छावनी आज पूरे विश्व के लिए 'ज्ञान का प्रतीक' है।

इंदौर का निवासी होने के नाते मेरा यह जन्मजात कर्तव्य है कि मैं इस माटी के ऋण को चुकाऊं। बाबा साहेब ने यहाँ से निकलकर कोलंबिया और लंदन तक अपनी विद्वत्ता का लोहा मनवाया और 6 दिसंबर 1956 (महापरिनिर्वाण) तक वे करोड़ों दबे-कुचलों को 'इंसान' होने का गौरव दे चुके थे। मैं संकल्पित हूँ कि इंदौर को दुनिया की 'अंबेडकरवादी वैचारिक राजधानी' बनाऊं।

तृतीय अध्याय: नारी शक्ति के उद्धारक (महिला सशक्तिकरण)

बाबा साहेब ने कहा था, 'मैं किसी समुदाय की प्रगति को उस समुदाय की महिलाओं द्वारा की गई प्रगति से मापता हूँ।' बन्ना मालवीय अंबेडकर के रूप में मेरा मिशन उनके इन क्रांतिकारी कार्यों को घर-घर पहुँचाना है:

हिंदू कोड बिल: बाबा साहेब ने महिलाओं को संपत्ति में अधिकार, तलाक का अधिकार और गरिमापूर्ण जीवन दिलाने के लिए अपने मंत्री पद की कुर्बानी दे दी थी। हम आज भी उनकी उस दूरदर्शिता के ऋणी हैं।

समान वेतन और मातृत्व लाभ: उन्होंने कामकाजी महिलाओं के लिए समान काम-समान वेतन और मातृत्व अवकाश (Maternity Benefit) की नींव रखी।

शिक्षा का द्वार: आज भारत की बेटियां यदि हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं, तो उसके मूल में बाबा साहेब का संघर्ष है। हम महिलाओं के लिए सुरक्षित और अधिकार-संपन्न समाज बनाने हेतु प्रतिबद्ध हैं।

चतुर्थ अध्याय: पुरुषार्थ और श्रमिक अधिकार

बाबा साहेब ने पुरुषों को केवल 'मजदूर' नहीं, बल्कि 'सम्मानित नागरिक' बनाया:

कार्य के घंटे (8 Hours): मजदूरों को शोषण से बचाने के लिए 12-14 घंटे के काम को घटाकर 8 घंटे करने का ऐतिहासिक कार्य बाबा साहेब ने किया।

श्रमिक संगठन और बीमा: ईएसआई (ESI) और भविष्य निधि (PF) जैसे प्रावधान उनकी ही देन हैं।

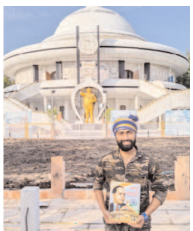

आर्थिक स्वावलंबन: हमारा लक्ष्य युवाओं को केवल 'नौकरी मांगने वाला' नहीं, बल्कि 'नौकरी देने वाला' (Entrepreneur) बनाना है। हम 'बहुजन बिजनेस फोरम' के माध्यम से पुरुषों को आर्थिक रूप से सशक्त करने की योजना पर काम कर रहे हैं।

पंचम अध्याय: संघर्षों का इतिहास और आंदोलनों की हुंकार

बन्ना मालवीय अंबेडकर का परिचय केवल शब्दों से नहीं, बल्कि सड़कों पर किए गए संघर्षों से है। जब-जब अन्याय हुआ, हम ढाल बनकर खड़े हुए:

संविधान पर आंच: जब भी संविधान की मूल भावना या आरक्षण की नीतियों के साथ छेड़छाड़ की कोशिश हुई, हमने इंदौर की सड़कों पर बड़े-बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया।

जातिगत अत्याचार के विरुद्ध प्रतिरोध: जहाँ भी किसी गरीब या दलित पर अत्याचार हुआ, बन्ना मालवीय वहाँ न्याय की आवाज बनकर पहुँचा। हमने राष्ट्रपति से लेकर मुख्यमंत्री , कलेक्टर से लेकर पुलिस कमिश्नर तक ज्ञापन देखकर आवाज उठाई लेकिन हमारा उद्देश्य केवल कागज सौंपना नहीं, बल्कि समस्या का जड़ से समाधान कराना रहा है।

षष्ठ अध्याय: मौलिक अधिकार – जीने की राह

बाबा साहेब द्वारा रचित संविधान हमें वे अधिकार देता है जिनसे हम अपनी तकदीर बदल सकते हैं:

अनुच्छेद 14: कानून की नजर में सब बराबर हैं।

अनुच्छेद 17: छुआछूत का अंत–इंसान को इंसान से जोड़ने का मार्ग।

अनुच्छेद 19: अभिव्यक्ति की आजादी–निडर होकर सच बोलने का अधिकार।

अनुच्छेद 21: गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार।

अनुच्छेद 32: संवैधानिक उपचारों का अधिकार (संविधान की आत्मा)।

समम अध्याय: विजन-2026 और भविष्य का संकल्प

मेरा लक्ष्य केवल राजनीति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन है। आने वाले समय में मैं निम्नलिखित कार्यों के लिए समर्पित हूँ:

संविधान पाठशाला: हर वार्ड और गाँव में युवाओं को उनके अधिकारों की जानकारी देना।

डिजिटल अंबेडकर लाइब्रेरी अगर युवा साथ देते हैं तो: आधुनिक तकनीक और कोडिंग के माध्यम से समाज के बच्चों को 'स्मार्ट' बनाना।

न्याय केंद्र: पीड़ितों को मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए एक मजबूत नेटवर्क बनाना।

स्वच्छता और सम्मान: सफाई कामगारों और श्रमिकों के लिए बेहतर जीवन स्तर की लड़ाई लड़ना।

ओजस्वी संदेश दिया:

'हमारा संघर्ष किसी के 'विरोध' में नहीं, बल्कि 'अन्याय' के विरुद्ध और 'स्वाभिमान' के पक्ष में है। आइए, बाबा साहेब के 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो' के नारे को सार्थक करें। 'बन्ना मालवीय अंबेडकर ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि उनका संघर्ष किसी के 'विरोध' में नहीं, बल्कि सबके 'उत्थान' के लिए है। वे एक ऐसे इंदौर का निर्माण करना चाहते हैं जहाँ जातिगत भेदभाव का कोई स्थान न हो और हर व्यक्ति 'भारतीय' होने पर गर्व करे।

उपसंहार: एक शपथ

मैं, बन्ना मालवीय अंबेडकर, आज यह शपथ लेता हूँ कि जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, मैं बाबा साहेब के 'प्रबुद्ध भारत' के सपने को पूरा करने के लिए लड़ता रहूँगा। न पद की लालसा, न कद का अहंकार– बस समाज की सेवा और समानता का अधिकार।

'संवैधानिक नैतिकता मेरा धर्म है, और मानवता की सेवा मेरा कर्म। 'बाबा साहेब का मिशन अधूरा है, जिसे हम सबको मिलकर पूरा करना है। इंदौर ने दुनिया को 'संविधान निर्माता' दिया है, अब इंदौर ही 'संविधान रक्षक' भी देगा।

बन्ना मालवीय अंबेडकर
भीम जन्म भूमि इंदौर से
बहुजन समाज सेवी
इंदौर (वार्ड 76 भिचौली हप्पी), मध्य प्रदेश

समीक्षा - व्यंग्य लोक का पठनीय अंक

अभी मई 2024 की ही बात है जब एक लोकप्रिय पत्रिका 'व्यंग्य लोक' का प्रवेशांक आया था और आज पत्रिका का पांचवा और छठा संयुक्त अंक पढ़ने का अवसर मिला। अपनी उम्र के हिसाब से यह ऑनलाइन पत्रिका भले ही अपने बाल्यकाल में विचरण कर रही हो किन्तु पत्रिका के सम्पादन और पत्रिका में प्रकाशित स्तरीय व्यंग्य, कविता और कहानियों की सामग्री पढ़कर ऐसा लगता है कि 'व्यंग्य लोक' अपने पूर्ण यौवनकाल की अवस्था में है, जिसे पढ़कर हर प्रेमी पाठक उसके यौवन पर मोहित अथवा मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। पत्रिका के यौवन का श्रृंगार करने वाले संपादक रामस्वरूप दीक्षित, सहायक संपादक आरती शर्मा तथा सहयोगी रणविजय राव, स्नेहा साक्षी, मधुर कुलश्रेष्ठ भी विशेष बधाई के पात्र हैं। पितरलोक खण्ड में स्वर्गीय श्री शरद जोशी के व्यंग्य की धार देखते ही बनती है। 'विचार लोक' में श्री रामविलास जांगीड के विमर्श-लेख में व्यंग्य रचनाओं के थोक लेखन के फायदे और नुकसान, दोनों पक्ष पर प्रभावी ढंग से लिखा गया है। 'गद्य लोक' खण्ड जिसे पत्रिका का मुख्य खण्ड भी कहा जा सकता है उसमे अबकी बार श्री अतुल चतुर्वेदी ने अपने व्यंग्य 'सधी हुई चुप्पी के मायने' के माध्यम से बकवास या वाचालता पर अल्प कटाक्ष किया है। सूर्यकुमार पांडे की 'विक्रम को मिला बेताल का समर्थन' में उन्होने चुनावों में मतदाताओं को लुभाने के हथकंडों पर तीखा प्रहार किया है। जबकि श्री श्रीकांत आप्टे द्वारा 'सेवयूलर पाजामे में सांप्रदायिक लंगोट' में नेताओं के दोहरे चरित्र पर सटीक व्यंग्य किया है। श्री कुमार सुरेश के व्यंग्य लेख 'शेर-चीता और मेहमान' में आम आदमी की समस्याओं पर पर्दा डालने के लिए सरकारों द्वारा चलाये जाने वाले शेर-चीता संरक्षण कार्यक्रम पर रोचक व्यंग्य प्रस्तुत किया है। अभिजीत दुबे के व्यंग्य 'एक अदद मुर्दे की तलाश' में राजनीतिज्ञों द्वारा गैर जरूरी मुद्दों को भी कैसे जनता के मुर्दे बना दिये जाते है, इसे बड़े ही रोचक ढंग से लिखा गया है।

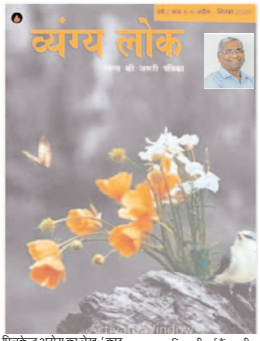

पिलकेन्द्र अरोरा का लेख 'कुछ साहित्यिक चुटकियाँ' साहित्य संसार में व्याप्त विसंगतियों पर अच्छा हास्य-व्यंग्य कहा जा सकता है। मुकेश असीमित ने 'मेरी अमर रचना' में लेखकों की इंच्छा और अपेक्षाओं को लेकर सुंदर व्यंग्य घड़ा है। श्रीमति शशि पुरवार की रचना 'जीवित होने का साक्ष्य' में उन्होने जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र प्राप्त करने में होने वाली परेशानियों पर एक सामान्य व्यंग्य लिखा है। आशुतोष कुमार की व्यंग्य रचना 'कब्रगाहों में हलचल' वोटर लिस्ट सुधार कार्यक्रम पर सटीक तंज है। और मुकेश नेमा ने 'गिरने के फायदे' में चारित्रिक गिरावट पर जोरदार प्रहार किया है। 'व्यंग्य लोक' के इस अंक से एक नया खण्ड 'जुगलबंदी' आरंभ किया गया है जिसमे एक ही विषय पर दो साहित्यकार अपने-अपने अंदाज में लिखेंगे। इसका प्रारम्भ दो जाने-माने साहित्यकारों श्री ब्रजेश कानूनगो और शशांक दुबे के लेखों से हो रहा है, जिसमें उन्हे 'मूर्खताओं का जमाना' विषय दिया गया था। श्री कानूनगो ने इंदौर की बीआरटीएस सड़क के निर्माण और फिर उसी को तोड़ने के सरकारी निर्णय पर तीखा कटाक्ष किया है तो वहीं दुबे ने सामान्य मूर्खताओं पर एक हास्य-व्यंग्य लिखा है। 'काव्य लोक' नामक खण्ड में रमेश प्रजापति, संजय कुन्दन और ब्रज श्रीवास्तव की तीन-तीन कविताएं शामिल की गई हैं। सभी कविताएं सहज, सरल भाषा में लिखी गई अनुकांत कविताएँ हैं। जबकि श्रीमति सरोजनी प्रीतम की कुछ उल्टी हंसिकाएं बोनस की तरह हैं। 'कथा लोक' में इंग्लैंड निवासी श्रीमती दिव्या माथुर जिनके सात कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। 'फेसबुक लोक' में मुखौटों की संस्कृति को आधार बनाकर लिखी गई श्रीमती मणिका मोहिनी की टिप्पणी 'लागा चुनरी में दाग' भी पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य करती है। 'पुस्तक लोक' खण्ड में ब्रजेश कानूनगो की पुस्तक 'धार फूलों की' समीक्षा श्री आशीष दशोत्तर ने, श्रीमती संतोष श्रीवास्तव की पुस्तक 'यादों के राजनीगंधा' की समीक्षा श्रीमती रानी सुमिता और श्री मुकेश असीमित की पुस्तक 'गिरने में क्या हर्ज है' की समीक्षा राम नगीना मौर्य ने और अजित कुमार राय द्वारा लिखित 'नई सदी की हिन्दी कविता का दृष्टि-बोध' की समीक्षा मधुर कुलश्रेष्ठ ने तथा प्रियदर्शी खैरा द्वारा लिखित व्यंग्य संकलन 'दाढ़ी से बड़ी मूंछ' की समीक्षा प्रमोद ताम्बट द्वारा लिखी गई है।

सुरेश रायकवार 152ए गोयलनगर, इंदौर

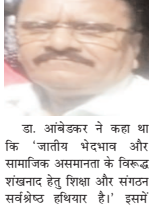

शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता के पैरोकार डा. आंबेडकर

डा. आंबेडकर ने कहा था कि 'जातीय भेदभाव और सामाजिक असमानता के विरूद्ध शंखनाद हेतु शिक्षा और संगठन सर्वश्रेष्ठ हथियार है।' इसमें वंचितों के लिये स्वयं को समर्थ और आत्मनिर्भर बनाने का संदेश है परंतु अपनी लकीर बड़ी करने के लिये दूसरे की लकीर छोटी करने का संदेश कतई नहीं है जैसा कि स्वतंत्रता के बाद सत्ता में आए वंचितों के हितचिंतक राजनीतिक दल नित्य नए कानून लाकर करते आए है। उक्त संदेश में सवर्णों के विरुद्ध हिंसा और विष वमन की अनुशंसा भी नहीं है जैसा कि आज सोशल मीडिया पर नित्य देखा जा सकता है। यह दोनों प्रवृत्तियां सामाजिक वैमनस्य को जन्म देने वाली होकर आंबेडकर के दृष्टिकोण को समझने में नाकामी की परिचायक है। या संभवतः जान बूझकर सोची समझी साजिश के तहत किया जा रहा षड्यंत्र है, यह एक गलती सुधारने के प्रयास में दूसरी गलती करने के समान है।

राजनीतिक दलों ने तो सत्ता प्राप्ति हेतु सभी समाज विरोधी, देश विरोधी, धर्म विरोधी एवं विघटनकारी हथकंडों को जायज मान लिया है जिसकी सजा मतदाता उन्हें समय समय पर देता रहता है। स्वयं को अजेय मानने वाले दलों को उनकी गलत नीतियों के लिये सड़क पर लाकर उनका स्थान दिखाने का कार्य मतदाता ने पहले भी किया है एवं भविष्य में भी करेगा इसमें कोई संशय नहीं है। परंतु वंचितों का एक बड़ा वर्ग जो समाज में आज अग्रिम पंक्ति में आ चुका है उसका भी सामाजिक दायित्व है कि आंबेडकर के उपरोक्त विचारों के अनुरूप समाज के निर्माण की दिशा में ईमानदार प्रयास करें एवं तथाकथित अगड़ों को गिराने के बजाय अपने ही पिछड़े बंधुओं को शिक्षित एवं सक्षम बनाने हेतु अपनी ऊर्जा एवं संसाधनों का सार्थक उपयोग करें।

किसी समाज के समर्थ एवं आत्म निर्भर होने का पैमाना मुख्य रूप से आर्थिक होता है। दलितों को आर्थिक रूप से सक्षम एवं आत्म निर्भर बनाने हेतु सरकार कटिबद्ध है एवं इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की जा सकती है, परंतु सवर्णों को गिरा कर दलितों को उठाने के लिये लाए गए कानून, चक्र को उलटा घुमाने की कोशिश है जिसका परिणाम केवल सामाजिक वैमनस्य और विघटन है जिसकी अनुमति किसी भी सरकार को नहीं दी जा सकती। यह आंबेडकर जी का उद्देश्य कभी रहा भी नहीं।

समाज को संगठित कर आत्मनिर्भर बनाने के अलावा अंबेडकर का दूसरा संदेश शिक्षा को लेकर है। शिक्षित होने पर समाज स्वतः आत्मनिर्भर हो जाएगा और आत्मनिर्भरता ही समर्थ होने की पहचान है। शिक्षा के प्रति उनके लगाव का प्रमाण है उनका पुस्तकों के प्रति अद्भुत प्रेम। मुम्बई स्थित उनके आलीशान आवास भवन राजगृह में उनका अपना निजी पुस्तकालय था जिसमें 50000 पुस्तकें थी यह संभवतः विश्व का उस समय का सबसे बड़ा निजी पुस्तकालय था। किसी भी राष्ट्र और समाज के बौद्धिक एवं सामाजिक उत्थान के लिये उत्तम श्रेणी की पुस्तकों को वे श्रेष्ठ साधन मानते थे। उनकी इस सोच का प्रमाण इस पत्र से मिलता है जो उन्होंने अमेरिका से बाम्बे क्रानीकल को लिखा था जब 1915 में सर फिरोज शाह मेहता का निधन हुआ उनके प्रशंसकों ने उनकी याद में सर मेहता की मूर्ति स्थापित करने का प्रस्ताव किया इस पर श्री अंबेडकर ने अपने पत्र द्वारा सुझाव दिया कि ऐसी मूर्ति स्थापित करने के स्थान पर श्री मेहता की स्मृति में पुस्तकालय बनाना उनका स्थायी एवं सर्वश्रेष्ठ स्मारक होगा। आज आंबेडकर जी के निधन के पश्चात उनकी मूर्तियां हम कई शहरों में स्थापित कर चुके हैं, इसके साथ साथ उनकी सोच के अनुरूप उनके स्मृति चिन्ह के रूप में पुस्तकालयों की भी स्थापना किया जाना उनके प्रति सार्थक आदरांजली होगी। इस दिशा में सरकार के साथ साथ समाज भी प्रयास करें।

छोटे लम्हे, बड़ी सीख

पुराने जूते

बेटा पिता के पुराने जूतों से शर्मिंदा था। बाद में पता चला कि पिता ने उसकी पढ़ाई के लिए अपने जूते नहीं बदले।

सीख : माता-पिता अपने त्याग छुपाते हैं। खाली कुर्सी

एक आदमी ने महंगा सोफा खरीदा, लेकिन उसके पिता अपनी पुरानी कुर्सी पर ही बैठना पसंद करते थे। बेटे ने उसे हटाने की बजाय घर के बीच में ही रख दिया।

सीख : किसी की सुविधा, आपके दिखावे से ज्यादा महत्वपूर्ण है। गायब फोटोग्राफर

माँ हमेशा परिवार की फोटो लेती थी–लेकिन खुद किसी फोटो में नहीं थीं। बाद में बच्चों को इसका एहसास हुआ।

सीख : सिर्फ यादें कैद मत करो, उनका हिस्सा बनो।

मुरझाता पौधा

पति-पत्नी रोज झगड़ते थे। एक पड़ोसी ने उन्हें एक पौधा दिया और कहा- 'जब झगड़ा करो, इसे पानी मत देना।' कुछ दिनों में पौधा मुरझा गया।

सीख : रिश्तों को रोज देखभाल चाहिए। अनदेखी प्यार को खत्म कर देती है।

महंगे तोहफे बनाम समय

एक पिता ने अपने बच्चे के लिए महंगे खिलौने खरीदे, लेकिन उसे समय नहीं दिया। एक दिन बच्चे ने कहा- 'मुझे खिलौने नहीं, आप चाहिए।'

सीख : भावनात्मक निवेश, पैसों से बड़ा होता है।

बिना बोले सुलझा झगड़ा

पति-पत्नी में बहस हुई। पति ने चाय बनाई, दोनों ने चुपचाप पी ली–और गुस्सा खत्म हो गया।

सीख : खामोशी और छोटा इशारा बड़ी समस्या सुलझा सकता है।

डॉ रीटा अरोड़ा